पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम– *डेवेलपिंग टीचिंग कंपीटेंसीज़*
संपादक– एम.एस. बावा व बी.एम. नागपाल
प्रकाशक– बीवा बुक्स, नयी दिल्ली
मूल्य– 595 रुपये
पृष्ठ– 229

किसी भी सेवापूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम (जैसे– बी.एड.) के पाठ्यक्रम में भावी शिक्षकों में शैक्षिक कौशलों का विकास करना एक प्रमुख उद्देश्य होता है। ये कौशल क्या हैं? व भावी शिक्षकों को इनमें पारंगत कैसे किया जा सकता है, यही बावा व नागपाल द्वारा संपादित उपरोक्त पुस्तक की विषय-वस्तु व विशेषता है।

इस पुस्तक में कुल 13 अध्याय हैं जो विभिन्न कौशलों की जानकारी देते हैं। पुस्तक की शुरुआत 'सूक्ष्म-शिक्षण' नामक पाठ से होती है। सूक्ष्म शिक्षण एक ऐसी विधा है जिसमें छात्र शिक्षक को स्कूलों में जाने से पूर्व कक्षा-शिक्षण के लिए छोटे स्तर पर तैयार किया जाता है। पाठ-2 से 8 विभिन्न शैक्षिक कौशलों का वर्णन करते हैं। ये हैं–प्रश्नोत्तर कौशल, कक्षा में छात्र प्रतिक्रिया को नियंत्रित करने का कौशल, स्पष्टीकरण का कौशल, उदाहरण देने का कौशल, प्रोत्साहित करने का कौशल, उद्दीपन परिवर्तन का कौशल व श्यामपट्ट-कार्य कौशल।

पाठ-9 अच्छे शिक्षक के एक दूसरे गुण कक्षा प्रबंधन पर विचार करता है। अगर किसी शिक्षक को अपने विषय का तो अच्छा ज्ञान है परंतु वह कक्षा प्रबंधन (नियंत्रित) करने में अक्षम है तो वह कभी भी कक्षा में प्रभावशाली शिक्षण कार्य कर ही नहीं सकता क्योंकि उसका पूरा समय तो छात्रों को अनुशासित करने में ही व्यतीत हो जायेगा। अत: कक्षा प्रबंधन एक ऐसा कौशल या कला है जिसे सीखना हर शिक्षक के लिए आवश्यक होता है। अध्याय-9 कुछ ऐसी ही विधाओं का वर्णन करता है जिससे भावी शिक्षक इस कौशल को सीख सकें।

अध्याय-10 इंटरैक्टिव टीचिंग की बात करता है, अर्थात् शिक्षक व छात्र के बीच आपसी वार्त्तालाप द्वारा शिक्षण (भयमुक्त वातावरण में)। शिक्षक किस प्रकार शिक्षण को इंटरैक्टिव बना सकता है, यह पाठ इसी की विवेचना करता है। पाठ-11 शिक्षण में छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण पर प्रकाश डालता है। इस पाठ में इसके अर्थ, इसकी आवश्यकता, इसके ऐतिहासिक पक्ष, आदि पर विस्तार से चर्चा की गई है। अध्याय-12 छात्रों में गैर-संज्ञानात्मक गुणों के विकास की व्याख्या करता है। गैर-संज्ञानात्मक गुणों से क्या तात्पर्य है, इनके प्रकार व उनकी व्याख्या तथा इनको विकसित करने के तरीकों पर इस अध्याय में चर्चा की गई है। अंतिम अध्याय-13 प्रैक्टिस टीचिंग कार्यक्रम (स्कूलों में 20 से 40 दिन का नमूना शिक्षण) के संगठन पर विचार करता है। इस कार्यक्रम में मुख्य भूमिका निभाने वाले व्यक्तियों जैसे-सुपरवाइज़र व स्कूल प्रिसिंपल की भूमिकाओं/उत्तरदायित्वों पर भी प्रकाश डाला गया है। इसी प्रकार कार्यक्रम से जुड़े अन्य जरूरी कार्यकलापों जैसे सेल्फ ऐपरेज़ल स्केल, पीउर ओबज़र्वेशन आदि का विवरण भी इस पाठ में दिया गया है।

कुल मिलाकर पुस्तक की विशेषता इसकी पठन सामग्री है। प्रत्येक अध्याय में विभिन्न कौशलों की विस्तृत विवेचना के पश्चात उनका भाव स्पष्ट करने के लिए अनेकों उदाहरणों की मदद ली गई है। साथ ही प्रत्येक पाठ के अंत में कौशल को विकसित करने की प्रक्रिया को दर्शाती एक नमूना पाठ-योजना भी दी गई है, जो इस पुस्तक की एक अन्य विशेषता है। अध्याय-11 में (छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण) देश-विदेश में चलाए जा रहे एक्सपेरिमेंटल स्कूल संस्थाओं का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसी प्रकार गैर-संज्ञानात्मक गुणों को भी सोदाहरण स्पष्ट किया गया है। इस पुस्तक का एक अन्य आकर्षण है प्रत्येक पाठ के अंत में दिया गया संक्षिप्त सार व संदर्भ।

कहीं-कहीं पुस्तक में सुधार की आवश्यकता भी महसूस होती है। जैसे– यदि पुस्तक की शुरुआत अंतिम अध्याय 'प्रैक्टिस टीचिंग का संगठन' से की जाती तो बेहतर रहता। इसी अध्याय में छात्र-अध्यापक के वर्गीकरण के आधारों में शिक्षण के माध्यम को भी जोड़ा जाना चाहिए। पृष्ठ 207 पर दिल्ली विश्वविद्यालय व गुरू गोविन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे बी. एड. कार्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए बताया गया है कि इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय में प्रैक्टिस टीचिंग दो फ़ेज़ में होती है। पुस्तक में लिखा है कि यहाँ प्रथम फ़ेज़ के शिक्षण के (एक या दो महीने) के पश्चात दूसरा शिक्षण ब्लॉक टीचिंग का होता है जिसकी अवधि दो सप्ताह होती है। दूसरे शिक्षण में ब्लॉक टीचिंग की बात सही नहीं है। यहाँ दूसरा फ़ेज़ फाइनल टीचिंग का होता है जिसमें बाह्य परीक्षक द्वारा छात्रों की शिक्षण काबिलियत का मूल्यांकन होता है। इस तथ्यात्मक गलती को सुधारने की आवश्यकता है।

इसी प्रकार प्रश्नोत्तर कौशल वाले अध्याय में यदि प्रश्न पूछने की कला पर भी विचार किया जाये तो अच्छा होगा। इसी प्रकार इंटरैक्टिव टीचिंग वाले अध्याय से कुछ पठन सामग्री की छँटनी करके उसे छोटा व पठनीय बनाने की आवश्यकता महसूस होती है।

कुल मिलाकर पुस्तक भावी शिक्षकों में विभिन्न शैक्षिक कौशलों का विकास करने के उद्देश्य को पूरा करती प्रतीत होती है। यद्यपि पुस्तक अभी केवल अंग्रेज़ी में है परंतु जल्द ही इसका हिंदी संस्करण प्रकाशित होने की संभावना है। यह पुस्तक प्रत्येक शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए उपयोगी बन पड़ी है। केवल टीचर एजुकेटर व भावी शिक्षक ही नहीं, सेवारत् शिक्षकों के लिए भी यह पुस्तक पठनीय है। मेरा मानना है कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने वाले प्रत्येक संस्थान की लाइब्रेरी में यह पुस्तक होनी चाहिए।

नीरज प्रिया
एन-16, नवीन शाहदरा
दिल्ली 110 032